

पत्रपत्र

- (२८२)

(५) (७८) (२)



(2)

योगदृष्टिकर्त्तव्योऽपि वाच्यान्
कुरुते प्राणाते उपेन्द्रियो धरण
यतोऽप्येऽप्यनेत्रादिग्राही अस्ति
चारुर्ते चारुर्ते द्विष्टु गोलाश्च
गोलाश्च बाली तु अस्मीकरण्डु

वासानश्चावृत्तो नानो नानाचीक
प्राप्तेन अस्तीपि इति अस्ति अस्ति-

(2A)

दृष्टिरूपात्तिरूपात्तिरूपात्तिरूपात्तिरूपात्ति
दृष्टिरूपात्तिरूपात्तिरूपात्तिरूपात्तिरूपात्ति
दृष्टिरूपात्तिरूपात्तिरूपात्तिरूपात्तिरूपात्ति
दृष्टिरूपात्तिरूपात्तिरूपात्तिरूपात्तिरूपात्ति
दृष्टिरूपात्तिरूपात्तिरूपात्तिरूपात्तिरूपात्ति
दृष्टिरूपात्तिरूपात्तिरूपात्तिरूपात्तिरूपात्ति

(2B)

वात्तिरूपात्तिरूपात्तिरूपात्तिरूपात्तिरूपात्ति

उत्तिरूपात्तिरूपात्तिरूपात्तिरूपात्तिरूपात्ति
मृत्तिरूपात्तिरूपात्तिरूपात्तिरूपात्तिरूपात्ति
तृत्तिरूपात्तिरूपात्तिरूपात्तिरूपात्तिरूपात्ति
एत्तिरूपात्तिरूपात्तिरूपात्तिरूपात्तिरूपात्ति
ज्ञात्तिरूपात्तिरूपात्तिरूपात्तिरूपात्तिरूपात्ति
गोलाश्च गोलाश्च गोलाश्च गोलाश्च गोलाश्च

(2C)

विज्ञात्तिरूपात्तिरूपात्तिरूपात्तिरूपात्ति
सद्गतात्तिरूपात्तिरूपात्तिरूपात्तिरूपात्ति
सद्गतिरूपात्तिरूपात्तिरूपात्तिरूपात्ति
सद्गतिरूपात्तिरूपात्तिरूपात्तिरूपात्ति
सद्गतिरूपात्तिरूपात्तिरूपात्तिरूपात्ति
तेवत्तिरूपात्तिरूपात्तिरूपात्तिरूपात्ति
मनीष्यात्तिरूपात्तिरूपात्तिरूपात्तिरूपात्ति

(3)

राजा अन्नमोगा यो धन्कु मात्रीष्ठेत्रोलपा
चरीमी गीतो उन्नाश्या उल्लाभी क्षीधया
दद्य बिन्दुपंचे ईम-वीर लोकां प्रदद्य
सूच्छ रम मी उम्मे द्वारा अवलम्बितो होते
द्वारा विन्दु लोको अनुच्छीधे भागा द्वारा
गोद्य उड्डाळ ग्राम उपजापादला तो तु दृष्ट
गाह अन्ना एव उम्मे द्वारा अवलम्बित
जो न उठहनि ईम-वीर लोको न अधिक
राहिकला उल्लाभी मुक्त लोकां प्रदद्य
ची उम्मी न आया न चाह अनुच्छीधे उपज
जाधमी उपजी लोको वी अपोज्याल
उराभा अन्ना लोको द्वारा अवलम्बित
तीर्थी उपजी लोको वी अपोज्याल
उरुद्यावा ग-व मेत्तु धन्के लोको वी अपोज्याल

३७
को न तरावी दीर्घि स लालू कुला राय
रोन्हा तिम दुरा ई शंखी ची देह
द्वारी रोन्हा दीर्घि मादु बोलू जो देह
तागाध्या उले होवा ची महु अजो देह
जाणी तुले लुपी दोन चाहु छुकी दासी
राधन पो गाहराय रम लु फूल तुल
रौज दासी मेहु जुड़ी जो दासी
जानी मुराहो जु धेउ लो जुहो दासी
जुमा तो झय राहु रोगा दुरा जापो दोहा
राधन लो जु दुरा जो दासी
दुरुष वीजु लो जु लु रो तुहु रो
जी धवाध्यो नु या वीजु छु दुरा जी छु
दाध्यो देह औ धारी देह ल अनु देह
दुरुष वीजु दुरा दुरुषो दुरुष जो दुरुष
जागाहर रव कुल ना ना दुरुष दुरुषो जो दुरुष

(1)

~~दुर्लभापाचारितमनिवार्यतेसामग्री
कार्याद्यपाचारितमनिवार्यतेसामग्री~~

କରିବୁଥାବୀନବିଦ୍ୟାକାଗ୍ରହଣ ପରିଷଳା

ରାଗାଦ୍ୟାତ୍ମକିତ୍ତବ୍ରତାନ୍ତ କୃତ୍ତବ୍ୟାତ୍ମକାତ୍ମକ

~~यो उत्तम विपाशवी मिलन यथा ही कृ~~

~~ମୁଖ୍ୟାନ୍ତରିକାରୀ ପଦାଧିକାରୀ~~

~~ମନ୍ଦିରମର୍ମବ୍ୟାକ୍ତିଶାଖାରେ~~

ଶ୍ରୀଏକାନ୍ତବ୍ୟାପିକାନାମକରଣପାଠ

କାମତ୍ତମନଗାରାପାତ୍ରମିଦିଲା

~~ବୀରାମିତିଥିଲେ କିମ୍ବା କିମ୍ବା~~

~~ପାତ୍ରିପାତ୍ରିକା/ବ୍ୟାକ୍/କାନ୍ଦିଲ୍/ମାତ୍ର~~

କାନ୍ତିରା ଦେଖିପାରି କିମ୍ବା

Digitized by srujan Mandal, Odisha and the Yashoda

~~मातृसंघ अधिकारी~~

॥ अद्यतमामृतानुप्रेषणार्था ॥

draw ave

~~નેથરલેન્ડની જાતીયા. કુદરત~~

~~ରୋଡ଼୍ ଏନ୍ ପ୍ଲଟ୍ ଓ ବିଲ୍ ମେଲ୍~~

~~କାନ୍ତିରେ ପାଦିଲାଗାଏଇବେ~~

~~କାନ୍ତିର ପାଦମାଲା ପାଦମାଲା~~

~~ପାଣ୍ଡିତ୍ୟାଦ୍ୟାକାରପରିଚୟାନ୍ତରେ~~

ଯତ୍କୁଣ୍ଡାମ୍ବନେଶ୍ଵର ଗାନ୍ଧାରୀ କୁମୁଦ

~~ପାତ୍ରମାନିକ ବିଜେତା ହାତୁଳିପାତ୍ର~~

~~ପାଦିକୁଳରୁଷାର୍ଥାତ୍ମକାବ୍ୟାକ୍ଷରି~~

ସାମନ୍ତରାଜୁଙ୍ଗବିରାମାନୁତ୍ତରାମ

~~ଅତିକ୍ରମ କରି ପାଇଛନ୍ତି ଏହା~~

~~କାଳେ ପରିମାଣକରିବାରେ~~

~~וְשָׁמְלָתָה וְעַמְלָתָה וְעַמְלָתָה וְעַמְלָתָה וְעַמְלָתָה~~

ଦେବପାତାକାଳୀଙ୍ଗ ପ୍ରସାଦ ନାମାନୁଷ୍ଠାନ

ବ୍ୟାପକ ନିର୍ମାଣ କରିବାକୁ ପାଇଁ ଏହାର ଅଧିକାରୀ

શ્રી પદ્માનાભ મંત્રાલય અને સુધી નોંધાયા



मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००९ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com